आंखों की हिफ़ाज़त कीजिए

ख़िताब
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

आंखों की हिफ़ाज़त कीजिए

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक
मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	आंखों की हिफ़ाज़त कीजिए
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	अगस्त 2001
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

आंखों की हिफ़ाज़त कीजिए

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

اَمَّابعد! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ، ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ۝ (النور: ٣٠)

اٰمنت بالله صدق الله مولانا العظيم،وصدق رسوله النبى الكريم، ونحن على ذالك من الشاهدين والشاكرين،والحمد لله رب العالمين۔

एक हलाक करने वाली बीमारी

इस आयत में अल्लाह तआला ने हमारी एक बीमारी का बयान फ़रमाया है। वह है "बद–निगाही" यह बद–निगाही ऐसी बीमारी है जिसमें लोग बेहद मुब्तला हैं, अच्छे ख़ासे पढ़े लिखे लोग, उलमा, अल्लाह वालों की सोहबत में उठने बैठने वाले, दीनदार, नमाज़ रोज़े के पाबन्द भी इस बीमारी के अन्दर मुब्तला हो जाते हैं, और आज कल तो हालत यह है कि अगर आदमी घर से बाहर निकले तो आंखों का बचाना मुश्किल नज़र आता है, हर तरफ़ ऐसे मनाज़िर हैं कि उन से आंखों को

पनाह मिलनी मुश्किल है।

बद-निगाही की हक़ीक़त

"बद-निगाही" का हासिल यह है कि किसी ग़ैर मेह्रम पर निगाह डालना, ख़ास कर जब्कि शह्वत (ख़्वाहिश) के साथ निगाह डाली जाए, या लज़्ज़त हासिल करने के लिए निगाह डाली जाए, चाहे वह ग़ैर मेह्रम हक़ीक़ी तौर पर ज़िन्दा हो, और चाहे ग़ैर मेह्रम की तस्वीर हो। उस पर भी निगाह डालना हराम है, और "बद-निगाही" के अन्दर दाख़िल है।

यह बद-निगाही का अमल अपने नफ़्स की इस्लाह के रास्ते में सब से बड़ी रुकावट है, और यह अमल इन्सान के बातिन के लिए इतना तबाह-कुन है कि दूसरे गुनाहों से यह बहुत आगे बढ़ा हुआ है, और इन्सान के बातिन (अन्दर) को ख़राब करने में इसका बहुत दख़ल है, जब तक इस अमल की इस्लाह न हो, और निगाह क़ाबू में न आए, उस वक़्त तक बातिन की इस्लाह का तसव्वुर तक़रीबन मुहाल है, हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि:

"النظر سهم مسموم من سهام ابليس" (مجمع الزوائد)

यानी यह "नज़र" शैतान के तीरों में से एक ज़हर भरा तीर है, यह तीर जो शैतान के कमान से निकल रहा है। अगर किसी ने उसको ठन्डे पेटों बर्दाश्त कर लिया, और उसके आगे हथियार डाल दिए, तो इसका मतलब यह है कि बातिन (अन्दर की हालत) की इस्लाह में अब बड़ी रुकावट खड़ी हो गयी, इसलिये कि इन्सान के बातिन को ख़राब करने में जितना

दख़ल इस आंख के ग़लत इस्तेमाल का है, शायद किसी और अ़मल का न हो।

यह कड़वा घूंट पीना पड़ेगा

मैंने अपने शैख़ हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से सुना, फ़रमाते थे कि निगाह का ग़लत इस्तेमाल बातिन के लिए क़ातिल ज़हर है, अगर बातिन की इस्लाह (सुधार) मन्ज़ूर है तो सब से पहले इस निगाह की हिफ़ाज़त करनी होगी। यह काम बड़ा मुश्किल नज़र आता है। ढूंडने से भी आंखों को पनाह नहीं मिलती, हर तरफ़ बे पर्दगी, बे हिजाबी, नंगापन और अश्लीलता का बाज़ार गर्म है, ऐसे में अपनी निगाहों को बचाना मुश्किल नज़र आता है, लेकिन अगर ईमान की मिठास हासिल करना मन्ज़ूर है और अल्लाह जल्ल जलालुहू के साथ ताल्लुक़ और मुहब्बत मन्ज़ूर है, और अपने बातिन की सफ़ाई, तज़्किया और तहारत मन्ज़ूर है, तो फिर यह कड़वा घूंट ऐसा है कि शुरू में तो बहुत कड़वा होता है, मगर जब ज़रा इसकी आ़दत डाल लो तो फिर यह घूंट ऐसा मीठा हो जाता है कि फिर इसके बग़ैर चैन भी नहीं आता।

अ़रब वालों का क़ह्वा

अ़रब के लोग क़ह्वा पिया करते हैं, आप हज़रात ने भी देखा होगा कि वे छोटे छोटे प्यालों में क़ह्वा पीते हैं। मुझे याद है कि जब मैं छोटा बच्चा ही था, उस वक़्त क़तर के एक शैख़ कराची आए हुए थे, हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के साथ में भी उनसे मिलने के लिए चला गया, उस मुलाक़ात के दौरान वहां मज्लिस में पहली बार वह क़ह्वा देखा, वह

क़ह्वा सब को पीने के लिए पेश किया गया। जब क़ह्वा का लफ़्ज़ सुना तो ज़ेहन में यही ख़्याल आया कि मीठा होगा, लेकिन जब उसको ज़बान से लगाया तो वह इतना कड़वा था कि उसको हलक़ से उतारना मुश्किल हो गया। हालांकि वह ज़रा सा क़ह्वा था, और उसका ज़ायक़ा भी कड़वा था, और अब वहां मज्लिस में बैठ कर कुल्ली तो कर नहीं सकते थे, इसलिये मज्बूरन उसको किसी तरह हलक़ से उतारा, लेकिन जब हलक़ से उतारा तो अब ज़रा उसका सुरूर महसूस हुआ, उसके बाद फिर एक और मज्लिस में पीने का इत्तिफ़ाक़ हुआ, आहिस्ता आहिस्ता अब यह हालत हो गयी कि अब इतना प्यारा और इतना मज़ेदार लगता है जिसकी कोई इन्तिहा नहीं, इसलिये कि अब पीने की आदत हो गयी है।

फिर मिठास और लज़्ज़त हासिल होगी

इसी तरह यह भी ऐसा कड़वा घूंट है कि शुरू में इसको पीना बड़ा दुश्वार मालूम होता है। लेकिन पीने के बाद जब इसका सुरूर चढ़ेगा तो फिर देखोगे कि इसके पीने में क्या लुत्फ़ है। अल्लाह तआला इसकी मिठास हम सब को अ़ता फ़रमा दे, आमीन। बहर हाल, यह ऐसी कड़वी चीज़ है कि एक बार इसकी कड़वाहट को बर्दाश्त कर लो, और एक बार दिल पर पत्थर रख कर इसकी कड़वाहट को निगल जाओ, तो फिर इन्शा अल्लाह, अल्लाह तआ़ला ऐसी मिठास, ऐसा सुरूर और ऐसी लज़्ज़त अ़ता फ़रमायेंगे कि उसके आगे इस बद-निगाही की लज़्ज़त कुछ नहीं है, उसके आगे इसकी कोई हक़ीक़त नहीं।

आंखें बड़ी नेमत हैं

यह आंख एक मशीन है और यह अल्लाह तआला की ऐसी नेमत है कि इन्सान इसका तसव्वुर नहीं कर सकता, और बे मांगे मिल गयी, और मुफ़्त में मिल गयी है, इसके लिए कोई मेहनत और पैसा ख़र्च नहीं करना पड़ा, इसलिये इस नेमत की क़द्र नहीं है। उन लोगों से जाकर पूछो जो इस नेमत से महरूम हैं। नाबीना हैं, या तो बीनाई (निगाह) चली गयी है। या जिनके पास यह नेमत शुरू ही से नहीं है, उनसे पूछो कि यह आंख क्या चीज़ है? और ख़ुदा न करे, अगर बीनाई (निगाह) मे कोई ख़लल आने लगे, और बीनाई जाती हुई मालूम होने लगे तो उस वक़्त मालूम होगा कि सारी कायनात अन्धेरी हो गयी है। और उस वक़्त इन्सान अपनी सारी दौलत ख़र्च करके भी यह चाहेगा कि मुझे यह दौलत दोबारा हासिल हो जाए, और यह ऐसी मशीन है कि आज तक ऐसी मशीन कोई ईजाद नहीं कर सका।

सात मील का सफ़र एक लम्हे में

मैंने एक किताब में पढ़ा था कि अल्लाह तआला ने इन्सान की आंख में जो यह पुत्ली रखी है, यह अन्धेरे मे फैलती है और रोशनी में सकुड़ जाती है। जब आदमी अन्धेरे से रोशनी में आता है या रोशनी से अन्धेरे में आता है तो उस वक़्त यह सकुड़ने और फैलने का अमल होता है, और इस सकुड़ने और फैलने में आंख के आसाब सात मील का फ़ासला तै करते हैं, लेकिन इन्सान को पता भी नहीं चलता कि क्या बात हुई, ऐसी नेमत अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमा दी है।

आंख का सही इस्तेमाल

अब अगर इस नेमत का सही इस्तेमाल करोगे तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैं तुमको उस पर सवाब भी दूंगा, जैसे इस आंख के ज़रिये मुहब्बत की निगाह अपने मां बाप पर डालो, तो हदीस शरीफ़ में है कि एक हज और एक उमरे का सवाब मिलेगा, अल्लाहु अक्बर, एक दूसरी हदीस में है कि शौहर घर में दाख़िल हुआ, और उसने अपनी बीवी को मुहब्बत की निगाह से देखा और बीवी ने शौहर को मुहब्बत की निगाह से देखा तो अल्लाह तआला दोनों को रहमत की निगाह से देखते हैं। जब इस आंख को सही जगह पर इस्तेमाल किया जा रहा है तो सिर्फ़ यह नहीं कि अल्लाह तआला उस पर लज़्ज़त और लुत्फ़ अता फ़रमा रहे हैं बल्कि उस पर अज्र और सवाब भी अता फ़रमा रहे हैं। लेकिन अगर इसका ग़लत इस्तेमाल करोगे और ग़लत जगह पर निगाह डालोगे, और ग़लत चीज़ें देखोगे तो फिर इसका वबाल भी बड़ा सख़्त है। और यह अमल इन्सान के बातिन को ख़राब करने वाला है।

बद-निगाही से बचने का इलाज

इस बद–गिनाही से बचने का एक ही रास्ता है, वह यह है कि हिम्मत से काम लेकर यह तै कर लो कि यह निगाह ग़लत जगह पर नहीं उठेगी। उसके बाद फिर चाहे दिल पर आरे ही क्यों न चल जाएं, लेकिन इस निगाह को मत डालो।

आरज़ुऐं ख़ून हों या हस्रतें बर्बाद हों
अब तो इस दिल को बनाना है तेरे क़ाबिल मुझे

बस हिम्मत और इरादा करके इस निगाह को बचाऐं, तो

फिर देखो कि अल्लाह तआला की तरफ़ से कैसी मदद और नुस्रत आती है. हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इस आंख को बुरी नज़र से बचाने की कुछ तदबीरें बयान फ़रमाई हैं, वे याद रखने की हैं, फ़रमाते हैं कि:

"अगर कोई औरत नज़र आए और नफ़्स यह कहे कि: एक दफ़ा देख ले, क्या हर्ज है? क्योंकि तू बद–फ़ेली तो करेगा नहीं। तो यह समझ लेना चाहिए कि यह नफ़्स का धोखा है और तरीक़ा नजात का यह है कि अ़मल न किया जाए"।

(अन्फ़ासे ई़सा)

इसलिये कि यह शैतान का धोखा है, वह कहता है कि देखने में क्या हर्ज है? देखना तो इसलिये मना है ताकि इन्सान किसी बुरे काम के अन्दर मुब्तला न हो. और यहां बरे काम का इम्कान ही नहीं। इसलिये देख लो, कोई हर्ज नहीं। हज़रते वाला फ़रमाते हैं कि यह नफ़्स की चाल है, और इसका इलाज यह है कि इस पर अ़मल न किया जाए, और चाहे जितना भी तक़ाज़ा हो रहा हो निगाह को वहां से हटा ले।

शह्वानी ख़्यालात का इलाज

हज़रत डा० साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बार फ़रमाने लगे कि यह जो गुनाह के दाई़ए (जज़्बे) और तक़ाज़े पैदा होते हैं। इनका इलाज इस तरह करो कि जब दिल में यह सख़्त तक़ाज़ा पैदा हो कि इस निगाह को ग़लत जगह इस्तेमाल करूं और इस निगाह को ग़लत जगह इस्तेमाल करके लज़्ज़त हासिल करूं। तो उस वक़्त ज़रा सा यह तसव्वुर करो कि अगर मेरे वालिद साहिब मुझे इस हालत में

देख लें, क्या फिर भी यह हर्कत करता रहूंगा? या अगर मुझे यह मालूम हो कि मेरे शैख़ मुझे इस हालत में देख रहे हैं, क्या फिर भी यह काम जारी रखूंगा? या मुझे पता हो कि मेरी औलाद मेरी इस हर्कत को देख रही है तो क्या फिर भी यह काम जारी रखूंगा? ज़ाहिर है कि अगर इनमें से कोई भी मेरी इस हर्कत को देख रहा होगा तो मैं अपनी नज़र नीची कर लूंगा, और यह काम नहीं करूंगा। चाहे दिल में कितना ही सख़्त तकाज़ा पैदा क्यों न हो।

फिर यह तसव्वुर करो कि इन लोगों के देखने से मेरी दुनिया व आख़िरत में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन मेरी इस हालत को जो अह्कमुल हाकिमीन देख रहा है उसकी परवाह मुझे क्यों न हो, इसलिये कि वह मुझे इस पर सज़ा भी दे सकता है। इस ख़्याल और तसव्वुर की बर्कत से उम्मीद है कि अल्लाह तआला इस गुनाह से महफ़ूज़ रखेंगे।

तुम्हारी ज़िन्दगी की फ़िल्म चला दी जाए तो?

हज़रत डाक्टर साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि की एक बात और याद आ गयी, फ़रमाते थे कि ज़रा इस बात का तसव्वुर करो कि अगर अल्लाह तआला आख़िरत में तुम से यों फ़रमायें कि: अच्छा अगर तुम्हें जहन्नम से डर लग रहा है, तो चलो हम तुम्हें जहन्नम से बचा लेंगे, लेकिन इसके लिये एक शर्त है, वह यह कि हम एक यह काम करेंगे कि तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी जो बचपन से जवानी और बुढ़ापे तक और मरने तक तुमने गुज़ारी है, उसकी हम फ़िल्म चलायेंगे और उस फ़िल्म के देखने वालों में तुम्हारा बाप होगा, तुम्हारी मां होगी, बहन भाई होंगे, तुम्हारी

औलाद होगी, तुम्हारे शागिर्द होंगे, तुम्हारे उस्ताद होंगे, तुम्हारे दोस्त व अहबाब होंगे। और उस फ़िल्म के अन्दर तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी का नक़्शा सामने कर दिया जायेगा, अगर तुम्हें यह बात मन्ज़ूर हो तो फिर तुम्हें जहन्नम से बचा लिया जायेगा।

इसके बाद हज़रत फ़रमाते थे कि ऐसे मौक़े पर आदमी शायद आग के अ़ज़ाब को गवारा कर लेगा, मगर इस बात को गवारा नहीं करेगा कि इन तमाम लोगों के सामने मेरी ज़िन्दगी का नक़्शा आ जाए......इसलिये जब अपने मां बाप, दोस्त अहबाब, अ़ज़ीज़ व क़रीबी लोगों और मख़्लूक़ के सामने अपनी ज़िन्दगी के हालात का आना गवारा नहीं तो फिर इन हालात का अल्लाह तआ़ला के सामने आना कैसे गवारा कर लोगे? इसको ज़रा सोच लिया करो।

दिल का माइल होना और मचलना गुनाह नहीं

फिर आगे दूसरे मल्फ़ूज़ में इर्शाद फ़रमाया कि:

"बद-निगाही में एक दर्जा मैलान का है, जो ग़ैर इख़्तियारी है, और उस पर पकड़ नहीं, और एक दर्जा है उसके तक़ाज़े पर अ़मल करने का, यह इख़्तियारी है। इस पर पकड़ है। (अन्फ़ासे ईसा)

मैलान का मतलब यह है कि देखने का बहुत दिल चाह रहा है, दिल मचल रहा है, यह दिल का चाहना, मचलना और माइल होना चूंकि यह ग़ैर इख़्तियारी है, इसलिये इस पर पकड़ भी नहीं, अल्लाह तआ़ला के यहां इस पर इन्शा अल्लाह कोई गिरफ़्त नहीं होगी, कोई गुनाह नहीं होगा......लेकिन दूसरा दर्जा यह है कि इस दिल के चाहने पर अ़मल कर लिया, और

उसकी तरफ़ निगाह उठा दी, यह इख़्तियारी है, और इस पर पकड़ भी है। या निगाह गैर इख़्तियारी तौर पर पड़ गयी थी, अब उस निगाह को अपने इख़्तियार से बाकी रखा। इस पर पकड़ है, और इस पर भी गुनाह है। तो मैलान का पहला दर्जा जो गैर इख़्तियारी है, वह माफ़ है, इस पर गिरफ़्त नहीं, और दूसरा दर्जा इख़्तियारी है, इस पर पकड़ है, आगे फ़रमाया:

सोच कर मज़ा लेना हराम है

"और इस अमल में इरादा करके देखना और सोचना सब दाख़िल है, और इसका इलाज नफ़्स का रोकना और निगाह का झुकाना है"।

किसी अजनबी और ना–मेहरम औरत का तसव्वुर करके लज़्ज़त (मज़ा) लेना, यह भी इसी तरह हराम है जैसे बद–निगाही हराम है, तो देखना भी इसमें दाख़िल है और सोचना भी इस में दाख़िल है। और इसका इलाज यह बता दिया कि नफ़्स को रोको, आगे पीछे, इधर उधर, और दायें बायें देखने के बजाए ज़मीन की तरफ़ निगाह रखते हुए चले।

रास्ते में चलते वक़्त निगाह नीची रखो

हज़रते वाला रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने शैतान को जन्नत से निकाला तो जाते जाते वह दुआ मांग गया कि या अल्लाह, मुझे क़ियामत तक की मोहलत दे दीजिए, और अल्लाह तआ़ला ने उसको मोहलत दे दी। अब उसने अकड़ फूं दिखाई, चुनांचे उस वक़्त उसने कहा कि:

"لَآتِيَنَّهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ"

(سورة الاعراف:١٧)

यानी मैं उन बन्दों के पास उनकी दायीं तरफ़ से, बायीं तरफ़ से, आगे से और पीछे से जाऊंगा, और चारों तरफ़ से उन पर हमला करूंगा। हज़रते वाला फ़रमाते हैं कि शैतान ने चार सिमतें तो बयान कर दीं, तो मालूम हुआ कि शैतान इन्हीं चारों से हमला करता है, कभी आगे से करेगा, कभी पीछे से करेगा, कभी बायें से करेगा, कभी बायें से करेगा, लेकिन दो सिम्तें वह छोड़ गया, उनको नहीं बयान किया। एक ऊपर की सिम्त और एक नीचे की सिम्त। इसलिये ऊपर की सिम्त भी महफ़ूज़ और नीचे की सिम्त भी महफ़ूज़ है, अब अगर निगाह ऊपर करके चलोगे तो ठोकर खाकर गिर जाओगे, इसलिये अब एक ही रास्ता रह गया कि नीचे की तरफ़ निगाह करके चलोगे तो इन्शा अल्लाह चारों तरफ़ के हमले से महफ़ूज़ रहोगे। इसलिये बिला वजह इधर उधर न देखो, बस अल्लाह अल्लाह करते हुए नीचे देखते हुए चलो। फिर देखोगे कि अल्लाह तआला किस तरह तुम्हारी हिफ़ाज़त करते हैं, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि:

"قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ" (النور:٣٠)

यानी मोमिनों से कह दो कि अपनी निगाहों को नीची कर लें, तो खुद कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने निगहा नीचे करने का हुक्म फ़रमा दिया, और फिर आगे इसका नतीजा बयान फ़रमा दिया कि इसकी वजह से शरम—गाहों की हिफ़ाज़त हो जायेगी।

यह तक्लीफ़ जहन्नम की तक्लीफ़ से कम है

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि आगे फ़रमाते हैं कि:

"हिम्मत करके इन (दोनों) को इख़्तियार करे, अगरचे नफ़्स को तक्लीफ़ हो, मगर यह तक्लीफ़ जहन्नम की आग की तक्लीफ़ से कम है।"

यानी इस वक़्त तो निगाह को बचाने से तक्लीफ़ हो रही है। लेकिन इस बद-निगाही के बदले जो जहन्नम का अज़ाब है, उस तक्लीफ़ के मुक़ाबले में यह तक्लीफ़ लाखों करोड़ों बल्कि अरबों गुना कम है, बल्कि यहां की तक्लीफ़ को वहां की तक्लीफ़ से कोई निस्बत ही नहीं, क्योंकि वहां का अज़ाब बे इन्तिहा है, कभी ख़त्म होने वाला नहीं, और यहां की तक्लीफ़ ख़त्म होने वाली है। आगे फ़रमाया कि:

हिम्मत से काम लो

"जब कुछ दिन हिम्मत से ऐसा किया जायेगा तो मैलान में भी कमी हो जायेगी, बस यही इलाज है, इसके सिवा कुछ इलाज नहीं, चाहे सारी उमर परेशान रहे।"

इसलिये कि जब इन्सान मेहनत और मशक़्क़त बर्दाश्त करता है, तो अल्लाह तआला ने उसके लिए वादा फ़रमाया है कि:

"وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا" (سورة العنكبوت:٦٩)

यानी जो शख़्स हमारे रास्ते में मुजाहदा करेगा हम ज़रूर उसको रास्ता दिखा देंगे। तो वह मुजाहदा करने वाले को रास्ता देते हैं, इसलिये मुजाहदा करके नज़र नीची कर लोगे तो आख़िर कार अल्लाह तआला मैलान भी कम फ़रमा देंगे,

इन्शा अल्लाह। बस यही इलाज है इसके अ़लावा कुछ इलाज नहीं, अगरचे सारी उमर हैरान व परेशान रहो, लोग यह चाहते हैं कि जब हम शैख़ के पास जायें तो शैख़ ऐसी फूंक मारे, या ऐसा नुस्ख़ा पिला दे, या ऐसा वज़ीफ़ा पढ़ दे, कि बस यह मैलान ख़त्म हो जाए। अरे भाई ऐसा नहीं हुआ करता! जब तक इन्सान हिम्मत से काम न ले।

दो काम कर लो

देखो, दो काम कर लो, एक हिम्मत को इस्तेमाल करो, दूसरे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करो। "हिम्मत के इस्तेमाल" का मतलब यह है कि अपने आपको जहां तक हो सके जितना बचा सकते हो बचा लो, और "अल्लाह की तरफ़ रुजू" का मतलब यह कि जब कभी ऐसी आज़माइश पेश आए तो फ़ौरन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करके कहो, या अल्लाह अपनी रहमत से मुझे बचा लीजिए, मेरी आंख को बचा लीजिए, मेरे ख़्यालात को बचा लीजिए। अगर आपने मदद न फ़रमाई तो मैं मुब्तला हो जाऊंगा।

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की सीरत अपनाओ

हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम जब आज़माइश में मुब्तला हुए तो उन्हों ने भी यही काम किया कि अपनी तरफ़ से कोशिश की। चुनांचे जब ज़ुलेख़ा ने चारों तरफ़ से दरवाज़े में ताले डाल दिए और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को गुनाह की दावत दी, उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अपनी आंखों से देख रहे थे कि दरवाज़े पर ताले पड़े हुए हैं और निकलने का कोई रास्ता नहीं है, मगर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम

दरवाज़ों की तरफ़ भाग पड़े, अब जब्कि आंखों से नज़र आ रहा है कि दरवाज़ों पर ताले पड़े हुए हैं तो भाग कर कहां जाओगे रास्ता तो है नहीं। मगर चूंकि अपने इख़्तियार में तो इतना ही था कि दरवाज़े तक भाग जाते, चुनांचे जब अपने हिस्से का काम कर लिया और अपने इख़्तियार में जो था वह कर लिया, और दरवाज़े तक पहुंच गये तो अल्लाह तआला से यह कहने के हक़दार बन गये कि या अल्लाह मेरे इख़्तियार में तो बस इतना ही था, मेरे बस में इस से ज़्यादा नहीं, अब आगे तो आपके करने का काम है, तो जब अपने हिस्से का काम करके अल्लाह तआला से मांग लिया कि या अल्लाह बाक़ी आगे का काम आपके क़ब्ज़े में है, तो फिर अल्लाह तआला ने भी अपने हिस्से का काम कर लिया, और उन्हों ने भी दरवाज़ों के ताले तोड़ दीए। इसी बात को मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अलैहि कितने ख़ूबसूरत अन्दाज़ में बयान फ़रमाते हैं कि:

गरचे रख़्ना नेस्त आलम रा पदीद
ख़ैरा यूसुफ़ दार मी बायद दवीद

अगरचे तुम्हें इस दुनिया के अन्दर कोई रास्ता और कोई पनाह लेने की जगह नज़र नहीं आ रही है। चारों तरफ़ से गुनाहों की दावत दी जा रही है, लेकिन तुम दीवानों की तरह इस तरह भागो जिस तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भागे, तुम जितना भाग सकते हो उतना तो भाग लो, बाक़ी अल्लाह से मांगो। बहर हाल, अगर इन्सान ये दो काम कर ले, एक अपनी हिम्मत की हद तक काम कर ले, और दूसरे अल्लाह से मांगे, यक़ीन कीजिए दुनिया में कामयाबी का सब से बड़ा राज़ यही है।

हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम का तरीक़ा इख़्तियार करो

हमारे हज़रत डा० अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि भी बड़ी अ़जीब अ़जीब बातें इर्शाद फ़रमाया करते थे, फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को तीन दिन तक मछली के पेट में रखा, अब वहां से निकलने का कोई रास्ता नहीं था, चारों तरफ़ तारीकियां और अन्धेरियां छाई हुई थीं, और मामला अपने बस से बाहर हो गया था। बस उस वक़्त उन अन्धेरियों में अल्लाह तआ़ला को पुकारा और यह कलिमा पढ़ा:

"لَآاِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ"

'ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन'

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब उसने हमें अन्धेरियों के अन्दर पुकारा तो फिर हमने यह कहा:

"فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّیْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ، وَكَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ (سورۃ الانبیاء)

यानी हमने उसकी पुकार सुनी, और हमने उस घुटन से उसको नजात अ़ता फ़रमा दी, चुनांचे तीन दिन के बाद मछली के पेट से निकल आए। आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हम इसी तरह मोमिनों को नजात देते हैं और देंगे। हज़रत डा० साहिब फ़रमाया करते थे कि तुम ज़रा सोचो तो सही कि अल्लाह तआ़ला ने यहां क्या लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया, कि हम मोमिनों को इसी तरह नजात देंगे? क्या हर मोमिन पहले मछली के पेट में जायेगा, और वहां जाकर अल्लाह तआ़ला को

पुकारेगा, तो अल्लाह तआला उसको नजात देंगे? क्या इस आयत का यही मतलब है? आयत का यह मतलब नहीं, बल्कि आयत का मतलब यह है कि जिस तरह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में अन्धेरियों में गिरफ़्तार हुए थे, इसी तरह तुम किसी और क़िस्म की अन्धेरियों में गिरफ़्तार हो सकते हो, लेकिन वहां पर भी तुम्हारा सहारा वही है जिसे हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने इख़्तियार किया था। वह यह कि हमें इन अल्फ़ाज़ से पुकारो!

"لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ"

'ला इला–ह इल्ला अन्–त सुब्हान–क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन'

जब तुम इन अल्फ़ाज़ से हमें पुकारोगे तो जिस क़िस्म की अन्धेरी में गिरफ़्तार होगे, हम तुम्हें नजात दे देंगे।

हमें पुकारो

इसलिये जब नफ़्स के तक़ाज़ों की तारीकियां (अन्धेरियां) सामने आयें, माहौल की ज़ुल्मतें और तारीकियां सामने आयें तो उस वक़्त तुम हमें पुकारो, या अल्लाह, इन तारीकियों से बचा लीजिए। इन तारीकियों से निकाल दीजिए। इन अन्धेरों से बाहर कर दीजिए। इनकी बुराई से महफ़ूज़ फ़रमाइये। जब दुआ करोगे तो फिर मुम्किन नहीं है कि यह दुआ क़ुबूल न हो।

दुनियावी मक़्सदों के लिए दुआ की क़ुबूलियत

देखिए, जब इन्सान किसी दुनियावी मक़्सद के लिए अल्लाह पाक से दुआ मांगता है। जैसे ये दुआयें करता है कि

या अल्लाह मुझे सेहत दे दे, या अल्लाह मुझे पैसे दे दे, या अल्लाह, मुझे फ़लां नौकरी दे दे, या अल्लाह, मुझे फ़लां ओहदा दे दे। वैसे तो हर दुआ कुबूल होती है, मगर कुबूलियत के अन्दाज़ अलग अलग होते हैं। कभी कभी तो वही चीज़ अल्लाह तआला दे देते हैं जो मांगी थी। जैसे पैसा मांगा था, अल्लाह तआला ने पैसा दे दिया। या अल्लाह तआला से कोई ओहदा मांगा था, वह दे दिया। लेकिन कभी कभी अल्लाह तआला यह समझते हैं कि यह इन्सान अपनी बे-वकूफ़ी और नादानी की वजह से ऐसी चीज़ मांग रहा है, अगर मैंने उसको दे दी तो वह चीज़ उसके लिए अज़ाब हो जायेगी। जैसे पैसा मांग रहा है, लेकिन अगर मैंने उसको पैसा दे दिया तो उसका दिमाग़ ख़राब हो जायेगा, और यह फ़िरऔन बन जायेगा। अपनी दुनिया भी ख़राब करेगा, और आख़िरत भी ख़राब करेगा। इसलिऐ हम इसको ज़्यादा पैसे नहीं देते, या जैसे एक शख़्स ने कोई ओहदा या मन्सब मांग लिया लेकिन अल्लाह तआला को मालूम था कि अगर यह ओहदा इसको मिल गया तो यह मालूम नहीं क्या क्या फ़साद बर्पा करेगा, इसलिये कभी कभी वह चीज़ देना मुनासिब नहीं होता जो उसने मांगी है, इसलिये उसके बजाए अल्लाह तआला उस से अच्छी चीज़ दे देते हैं।

दीनी मक़्सद की दुआ ज़रूर कुबूल होती है

लेकिन अगर कोई शख़्स दीन मांग रहा है, और यह दुआ कर रहा है कि या अल्लाह, मुझे दीन पर चला दे, मुझे सुन्नत पर चला दीजिए, मुझे गुनाहों से बचा लीजिए, तो क्या इसमें इस बात का इम्कान (संभावना) है कि दीन पर चलने में

नुक़सान ज़्यादा है, और किसी और रास्ते पर चलने में नुक़सान कम है? और अल्लाह तआला दीन के बजाए वह दूसरे रास्ते पर चला दे? चूंकि इस बात का इम्कान ही नहीं इसलिये वह दुआ जो दीन के लिए मांगी जाती है। कि या अल्लाह, मुझे दीन अ़ता फ़रमा दे। या अल्लाह, मुझे गुनाहों से बचा ले। या अल्लाह, मुझे नेकियां और अच्छाइयां अ़ता फ़रमा दे। ये दुआयें तो ज़रूर क़ुबूल होनी हैं, इसमें क़ुबूल न होने का कोई इम्कान ही नहीं। इसलिये जब भी अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगो तो इस यक़ीन के साथ मांगो कि ज़रूर क़ुबूल होगी।

दुआ़ के बाद अगर गुनाह हो जाए?

हमारे हज़रत डा० साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जब तुमने यह दुआ़ मांग ली कि या अल्लाह, मुझे गुनाह से बचा लीजिए, लेकिन इस दुआ़ के बाद फिर तुम गुनाह के अन्दर मुब्तला हो गये, इसका मतलब यह हुआ कि दुआ़ क़ुबूल नहीं हुई। दुनिया के मामले में तो यह जवाब दिया था कि जो चीज़ बन्दे ने मांगी थी, चूंकि वह बन्दे के लिए मुनासिब नहीं थी इसलिये अल्लाह तआ़ला ने वह चीज़ नहीं दी, बल्कि कोई और चीज़ दे दी। लेकिन एक शख़्स यह दुआ़ करता है कि या अल्लाह, मैं गुनाह से बचना चाहता हूं। मुझे गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ दे दीजिए, तो क्या यहां भी यह जवाब दे सकते हैं कि गुनाह से बचना अच्छा नहीं था, इस से अच्छी कोई चीज़ थी, जो अल्लाह तआ़ला ने इस दुआ़ मांगने वाले को दे दी?

तौबा की तौफ़ीक़ ज़रूर हो जाती है

बात असल में यह है कि गुनाह से बचने की यह दुआ

कुबूल तो हुई, लेकिन इस दुआ का असर यह होगा कि अव्वल तो इन्शा अल्लाह गुनाह सर्ज़द नहीं होगा, (अमल में नहीं आयेगा) और अगर मान लें कि गुनाह हो भी गया तो तौबा की तौफ़ीक ज़रूर हो जायेगी, इन्शा अल्लाह। यह नहीं हो सकता कि तौबा की तौफ़ीक़ न हो, इसलिये दीन के बारे में यह दुआ कभी रायगां नहीं जा सकती, कभी यह दुआ बेकार नहीं हो सकती। और अगर गुनाह के बाद तौबा की तौफ़ीक़ हो जाए तो वह तौबा कभी कभी इन्सान को इतना ऊंचा ले जाती है, और उसका इतना दर्जा बुलन्द करती है कि कभी कभी गुनाह न करने की सूरत में उसका दर्जा इतना बुलन्द न होता। और वह इतना ऊंचा न जाता, इसलिये कि ग़लती सादिर होने के बाद जब अल्लाह तआला के सामने उसने तौबा की, रोया, गिड़गिड़ाया तो अल्लाह तआला ने उसके नतीजे में उसका दर्जा और ज़्यादा बुलन्द कर दिया।

फिर हम तुम्हें बुलन्द मकाम पर पहुंचायेंगे

इसलिये हमारे हज़रत डा० साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि इस दुआ करने के बा-वजूद अगर पांव फिसल गया, और वह गुनाह उस से हो गया तो अल्लाह तआला से बदगुमान मत हो जाओ कि अल्लाह मियां ने हमारी दुआ कुबूल नहीं की, अरे नादान! तुझे क्या मालूम, हम तुझे कहां पहुचांना चाहते हैं। इसलिये कि जब गुनाह ज़ाहिर होगा तो फिर हम तुम्हें तौबा की तौफ़ीक़ देंगे, फिर हम तुम्हें अपनी सत्तारी का, ग़फ़्फ़ारी का, अपनी पर्दा पोशी का, अपनी रहमतों के नाज़िल होने का मकाम बनायेंगे। इसलिये इस दुआ को

कभी रायगां और बेकार मत समझो। बस ये दो काम करते रहो। हिम्मत से काम लो और दुआ मांगते रहो। फिर देखो, क्या से क्या हो जाता है, इन्शा अल्लाहु तआ़ला।

तमाम गुनाहों से बचने का सिर्फ़ एक ही नुस्ख़ा

बद–निगाही के बारे में ये बातें अ़र्ज़ कर दीं। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़र्माये, आमीन। सिर्फ़ बद–निगाही नहीं, दुनिया के हर गुनाह के अन्दर यह ज़रूरी है कि हिम्मत का इस्तेमाल करना, उसको बार बार ताज़ा करना, और अल्लाह तआ़ला से रुजू और दुआ़ करना, ये दोनों चीज़ें ज़रूरी हैं। इनमें से सिर्फ़ एक चीज़ से काम नहीं बनेगा। अगर सिर्फ़ दुआ़ करते रहोगे और हिम्मत नहीं करोगे, तो यह चीज़ हासिल नहीं होगी। जैसे एक आदमी पूरब की तरफ़ भागा जा रहा है और साथ में अल्लाह तआ़ला से दुआ़ यह कर रहा है कि या अल्लाह, मुझे पश्चिम में पहुंचा दे। अरे तू पूरब की तरफ़ भाग रहा है, और दुआ़ पश्चिम की कर रहा है, यह दुआ़ कैसे क़ुबूल होगी? कम से कम पहले अपना रुख़ तो पश्चिम की तरफ़ कर, और जितना तेरे बस में है वह तो कर ले, और फिर अल्लाह तआ़ला से मांग कि या अल्लाह, मुझे पश्चिम में पहुंचा दे, तब तो वह दुआ़ फ़ायदेमन्द है, वरना वह दुआ़ दुआ़ नहीं, वह तो अल्लाह तआ़ला से मज़ाक़ है।

इसलिए पहले रुख़ इस तरफ़ करो और हिम्मत करो, और जितना हो सके, उस तरफ़ क़दम बढ़ाओ, और फिर अल्लाह तआ़ला से मांगो, तमाम गुनाहों से बचने का यही नुस्ख़ा है।

इसके अ़लावा कोई नुस्ख़ा नहीं है, और सारी ताआ़त (अ़िबादतों और नेक आमाल) को हासिल करने का भी यही नुस्ख़ा है। अल्लाह तआ़ला हम सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

واٰخر دعوانا ان الحمد للّٰه رب العالمين